रामचरित मानस में शासन तन्त्र

डॉ0 मंजू कुमारी

मानस में वर्णित शासन तन्त्र पर विचार करने से ज्ञात होता है कि तुलसी राम के शासन तन्त्र के समर्थक और रावण के शासनतन्त्र के विरोधी हैं। उन्होंने तत्कालीन मुगल प्रशासन तन्त्र को कलियुग वर्णन के रूप में मानस के 'उतरकाण्ड' में प्रस्तुत किया। वे अपने युग के राजाओं के शासन तन्त्र को केवल पण्डप्रधान, प्रज्ञाशोषण, धर्म विहिन, लोक चेतना से रहित पाप परायण, नीति विहीन, स्वेच्छाचारी, अनाचारी, अयोग्य भयग्रस्त, प्रजापालन व रंजन से दूर तथा एंकाकी नीति से परिचालित कहा है।